प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोध-छात्र कुलदीप एन. सोलंकी द्वारा पी-एच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध **"रस की शास्त्रीय अवधारणा के विशेष संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के रस-चिंतन का आलोचनात्मक अनुशीलन"** उनका मौलिक शोध-प्रबन्ध है तथा इससे पूर्व अन्य विश्वविद्यालयों की किसी भी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध छात्र के गहन अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम है ।

शोध-निर्देशक

डॉ. अरुण प्रकाश मिश्र
रीडर,
स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर

अध्यक्ष

डॉ. सनतकुमार व्यास
आचार्य एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर

स्थान : वल्लभ विद्यानगर
दिनांक : 18-12-2011

CERTIFICATE

Certifyed that the work incorporatated in thesis entitled, "रस की शास्त्रीय अवधारणा के विशेष संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के रस-चिंतन का आलोचनात्मक अनुशीलन" submittted by Mr. KULDIPSINH N. SOLANKI, comprises the result of independelent and original investigations carried out by the candidate under my supervisions. The material that has been obtained (and used) from other sources has been duly acknowledged in this thesis.

Research Guide

Place : V.V. Nagar
Date : ૧૪-૧૨-૨૦૦૧

अनुक्रमणिका



कृतज्ञता ज्ञापन

इसमें शंका की कोई बात नहीं है कि किसी भी महान कार्य के पीछे किसी महान व्यक्ति का हाथ होता है । गुरु के रूप में अपने परम आदररणीय गुरुवर डॉ.अरुण प्रकाश मिश्रजी मिले । वे मेरे लिए न केवल अध्ययन के गुरु रहे, बल्कि जीवनपथ के भी पथ प्रदर्शक रहे । मेरे इस शोध-कार्य में उन्होंने अपने व्यस्ततम् समय में से भी समय निकालकर मुझे मार्गदर्शन किया । उन्हीं की कृपा का यह फल है । उनके प्रति मैं नतमस्तक हूँ । उनके लिए मैं चिर आयु की कामना करता हूँ ताकि वे मुझ जैसे अन्य शोधार्थियों के लिए भी मार्गदर्शन दे सके ।

हिन्दी-विभाग के पूर्वाध्यक्ष डॉ. शिवकुमार मिश्र जिन्होंने इस उम्र में अधिकतर कार्यरत रहने के बावजूद भी मेरे इस शोध-प्रबन्ध में सुचारू रूप से मार्गदर्शन दिया है, जरूरत पड़ने पर शोध-प्रबन्ध से सम्बन्धित आवश्यक सुविधाएँ एवं संदर्भ ग्रन्थ उपलब्ध कराकर मुझे अनुगृहित किया है । उनके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द कम पड़ जाते है ।

एम.एस. युनिवर्सिटी के प्रो. भगवानदास कहार, गुजरात विद्यापीठ के प्रो.रामगोपाल सिंह, गुजरात युनिवर्सिटी के प्रो. रंजना अरगड़े तथा नलिनी आर्ट्स कॉलेज के डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल एवं प्रो. भरतसिंह झाला का भी मैं दिल से आभार व्यक्त करता हूँ । हिन्दी विभाग में कार्यरत अन्य गुरुजनों के प्रति मैं नतमस्तक हूँ जिन्होंने समय-समय पर अपने सुचारू मार्गदर्शन द्वारा मुझे लाभान्वित किया । डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी तथा डॉ. कमलेश त्रिवेदी के प्रति मैं अन्त:करण से अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ ।

इस कार्य को संभव करने में मेरे पूज्य पिताश्री एवं माताश्री तथा मेरे जीवनपथ के पथ प्रदर्शक श्री दवे साहब, ज्येष्ठ भ्राता युवराजसिंह और अतुलकुमार एवं भाभीश्री का भी अमूल्य योगदान रहा है । मैं किन शब्दों में इनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ, उनके ऋण से अऋण होना मेरे लिए कदापि संभव नहीं है ।

मैं अपने मित्रों को इस अवसर पर कैसे भूल सकता हूँ, जिन्होंने भी मुझे इस कार्य को सफल करने के लिए जागृत रखा । भोगीलाल पटेल, मुकेश जोशी, डॉ.खन्नाप्रसाद अमीन, विरेन्द्रसिंह गोहिल, महिपालसिंह चौहाण का भी आभार प्रकट करता हूँ । इस कार्य में मेरे भतीजे दिव्या और तपन को भी कैसे भूल सकता हूँ ।

अंत में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मुझे शोधकार्य में सहयोग देनेवाले सभी सहयोगी के प्रति मैं हृदय से अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ ।

-कुलदीपसिंह सोलंकी



प्राक्कथन

भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा जितनी विस्तीर्ण है, उतनी ही समृद्ध भी । दो हजार वर्ष की अविच्छिन्न चिन्ताधारा का गौरव अन्यत्र दुर्लभ है । इस अवधि में भारतीय मनिषियों ने अनेक ऐसे सिद्धांतों की उद्‌भावना की जो आलोचना के सही मानदण्ड सिद्ध हुए । किसी आलोचना सिद्धांत की महत्ता का अन्यतम् निकष उसकी व्यापकता भी है । सार्वभौमता और सार्वकालिकता वैज्ञानिक नियमों में ही नहीं, सापेक्ष भाव से साहित्यिक सिद्धांतों में भी विद्यमान रहती है । इस निकष पर भारतीय काव्यशास्त्र के प्राय: सभी सिद्धांत खरे उतरे हैं । उनमें 'रससिद्धांत' का स्थान नि:संदेह सर्वोच्च है । दो हजार वर्षो से रससिद्धांत का विवेचन, परिक्षण, पुनराख्यान होता आ रहा है और संभावनाएँ आज भी नि:शेष नहीं हुई है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विषय "रस की शास्त्रीय अवधारणा के विशेष संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के रस-चिंतन का आलोचनात्मक अनुशीलन" है । यह शोध-प्रबन्ध दो खण्डों में विभाजित किया गया है । अनुसंधान का प्रथम खण्ड 'रस की शास्त्रीय अवधारणा' से सम्बन्धित है । संस्कृत के काव्यशास्त्रीय उपलब्ध ग्रंथों के आधार पर 'रस-सिद्धांत' के प्रथम आचार्य 'भरतमुनि' को माना गया है । उनका समय दूसरी या तीसरी शताब्दी पूर्व के बीच माना गया है । इस परंपरा के अंतिम उद्‌भावक पंडितराज जगन्नाथ है । इस शोध-प्रबन्ध में आचार्य भरतमुनि से लेकर पंडितराज जगन्नाथ तक के सभी संस्कृत आचार्यो ने शास्त्र सम्मत जो 'रस-विवेचन' प्रस्तुत किया है, उसको इस महा-निबंध में प्रस्तुत करने का प्रयास है । इसके अन्तर्गत संस्कृत साहित्यशास्त्र के आचार्यो ने 'रस की परिभाषा', 'रस का स्वरुप', 'रस के अवयव', 'रस के प्रकार', 'रसास्वाद', 'रसनिष्पत्ति' एवं 'साधारणीकरण' सम्बन्धी जो विचार शास्त्रीय ढंग से प्रस्तुत किये है, उनको भी प्रस्तुत किया है ।

शोध-प्रबन्ध का दूसरा खंड हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रतिष्ठित समीक्षक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के रस-चिंतन से सम्बन्धित है । प्राय: यह कहा जाता है कि संस्कृत साहित्यशास्त्र के अंतिम आचार्य पंडितराज के बाद 'रस-विवेचन' समाप्त हो गया है, लेकिन हिन्दी साहित्य में आचार्य शुक्लजी एक ऐसे समीक्षक है, जो परंपरित चली आ रही मान्यताओं को नवीनतम रुप देकर 'रस-चिंतन' का विवेचन करते हैं । इस खंड में शुक्लजी ने 'रस की परिभाषा', 'रस का स्वरूप', 'रस के अवयव', 'रस के प्रकार', 'रसनिष्पत्ति' एवं 'साधारणीकरण' सम्बन्धी जो विवेचन परंपरा से भिन्न हटकर किया है, उसको प्रस्तुत करने का प्रयास है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में रस की शास्त्रीय अवधारणा को प्रस्तुत करके आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के रस-चिन्तन का आलोचनात्मक अनुशीलन है । इसमें शुक्लजी कहाँ तक रस की शास्त्रीय परम्परा से जुड़े हुए हैं और कहाँ वे उस परंपरित रूप में अपनी मौलिकता का रूप देकर नयापन लाते हैं, इसको भी दिखाने

का प्रयत्न किया गया है । अंत में शास्त्रीय अवधारणा और शुक्लजी के 'रस-चिंतन; में साम्य-वैषम्य का भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को सुविधा की दृष्टि से सात अध्यायों में विभाजित कर अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है ।

इस शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय 'रस सम्प्रदाय का संक्षिप्त इतिहास' के अन्तर्गत 'रस' शब्द का अर्थ-विकास, शास्त्रीय अर्थ का आविर्भाव एवं रस-सिद्धांत को तीन वर्गो में विभाजित कर इसकी विस्तार से चर्चा की है । इसके अन्तर्गत आचार्य भरत मुनि से लेकर संस्कृत के अंतिम आचार्य पंडितराज जगन्नाथ तक के सभी आचार्यो के रस ग्रन्थ एवं रस-सम्बन्धि विचार को रखा गया है ।

द्वितीय अध्याय 'रस-चिन्तन की शास्त्रीय परंपरा-१' के अन्तर्गत आचार्य भरतमुनि से लेकर अंतिम आचार्य पंडितराज जगन्नाथ तक के सभी आचार्यो की रस परिभाषा रस के अवयव, रस क स्वरूप, रस के प्रकार एवं रसास्वाद मान्यताओं को रखा है ।

तृतीय अध्याय 'रस-चिन्तन की शास्त्रीय परंपरा-२' में 'रस-निष्पत्ति; एवं साधारणीकरण की शास्त्रीय आचार्यो द्वारा किया गया चिंतन को प्रस्तुत किया है ।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को संक्षिप्त जीवनवृत्त को प्रस्तुत किया है । शुक्लजी के विचारधारा का स्त्रोत एवं व्यक्तित्व विकास के स्त्रोत को भी विस्तार से रखा है । आचार्य शुक्ल की जितनी भी समीक्षाएँ हैं, इसको भी प्रस्तुत किया हैं और अंत में उन सभी समीक्षाओं का विहंगावलोकन किया है ।

पंचम अध्याय 'आचार्य शुक्ल और रस' के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य में रस-चिंतन के अन्तर्गत शुक्लजी के महत्व को निरूपित किया है । इसमें शुक्लजी की 'रस परिभाषा', 'रस का स्वरूप', 'रस के अवयव', 'रस के प्रकार' और 'रसास्वाद सम्बन्धि उनके विचार' को रखा गया है ।

षष्ठम अध्याय 'आचार्य शुक्ल और रसास्वाद' के अन्तर्गत शुक्लजी ने 'रस-निष्पत्ति' एवं 'साधारणीकरण' को लेकर जो चिंतन किया था, उसको विस्तार से रखा है ।

अंतिम सप्तम अध्याय 'आचार्य शुक्ल के रस विवेचन की मौलिकता; के अन्तर्गत संस्कृत आचार्यों की शास्त्रीय परंपरा को बिन्दुओं को रखकर शुक्लजी के विचार को रखा है । इसमें रस परिभाषा, रस का स्वरूप, रस के अवयव, रस के प्रकार और रसास्वाद सम्बन्धी शास्त्रीय अवधारणा को प्रस्तुत कर, शुक्लजी के चिंतन को प्रस्तुत किया है । शुक्लजी कौन-सी शास्त्रीय बिन्दुओं को ग्रहण करते हैं और कौन-सी बिन्दुओं पर अपनो मौलिकता दिखाते है, इसको भी उदाहरण सहित रखा है ।

अंत में उपसंहार और समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है ।

